भाग्यवाद को बढ़ावा देता भारतीय मीडिया

जे. अकलेचा

क्या हर चीज का सम्बंध ग्रह-नक्षत्रों से जोड़ा जाना चाहिए? क्यों हर अच्छी-बुरी घटना के लिए ग्रह-नक्षत्रों को ज़िम्मेदार ठहराया जाना चाहिए? क्या बिहार में कोसी की बाढ़ इसलिए आई क्योंकि नेपाल में तटबंध फूटने से कुछ दिन पहले ही चंद्र ग्रहण की घटना हुई थी?

इन दिनों मीडिया, चाहे वह अखबार हो या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, ज्योतिष शास्त्र को इस तरह से पेश करने में लगा है, मानो वही सब कुछ है। अखबारों में जहां नए-नए विषयों को ज्योतिषीय सांचे में ढालकर आकर्षक ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास किया जा रहा है, वहीं न्यूज़ चैनलों में भविष्यवक्ता खुद को एक-दूसरे से बेहतर एक्टर साबित करने की होड़ में नज़र आ रहे हैं। इससे पाठक और दर्शक इनकी ओर खिंचे ज़रूर चले आ रहे हैं, लेकिन साथ ही मीडिया की गंभीरता और उसकी भूमिका पर भी सवाल उठ रहे हैं।

ज्योतिष शास्त्र कितना वैज्ञानिक है और कितना अवैज्ञानिक, इस बहस का कोई अंत नहीं है। बहस का विषय तो यह है कि क्या मीडिया को इस तरह से भाग्यवाद का महिमामंडन करना चाहिए? यह सच है कि जैसे-जैसे समाज में सम्पन्नता आती जाती है, वैसे-वैसे लोगों में अपने भविष्य को लेकर डर भी बढ़ता जाता है। भारतीय समाज में भी यही हो रहा है। सम्पन्नता के साथ व्यक्ति में भविष्य के प्रति भय बढ़ा है जिसके फलस्वरूप उसका भाग्यवाद में यकीन बढ़ता जा रहा है। वह हर कार्य करने से पहले पंचांग देखने लगा है, मुहुर्त पूछने लगा है ताकि 'अनुचित' वक्त में काम करने से कहीं उसका भाग्य न बिदक जाए। यानी कर्म से उसका विश्वास डिगने लगा है। इसी का भयादोहन कथित ज्योतिषाचार्य कर रहे हैं। दुर्भाग्य की बात यह है कि मीडिया भी इस बहती गंगा में हाथ धोने में पीछे नहीं है।

दरअसल, लोग दो वजहों से भविष्यवाणियां पढ़ते या सुनते हैं - एक, मनोरंजन के रूप में और दूसरा, मन की शांति के लिए क्योंकि अधिकांश भविष्यवाणियां सकारात्मक पुट लिए होती हैं। इसी मानसिकता का लाभ भविष्यवक्ता उठाते हैं। मीडिया, खासकर इलेक्ट्रानिक मीडिया, भी वही पेश करता है जो दर्शकों को अच्छा लगे। अब चूंकि अधिकांश भविष्यवाणियां सकारात्मक होती हैं, इसलिए दर्शक भी उनमें आनंद उठाते हैं। मीडिया का बहाना यह होता है जो दर्शक देखना चाहते हैं, हम वही तो दिखाते हैं।

कुछ साल पहले तक ग्रह-नक्षत्रों के प्रभाव-कुप्रभाव की इतनी बातें नहीं होती थीं। केवल सूर्य ग्रहण व चंद्र ग्रहण के समय ही लोग आशंकित रहते थे, लेकिन आज तो आसमान की हर घटना को ज्योतिष शास्त्र के चश्मे से देखा जाने लगा है। अगर शुक्र धरती के पास आ रहा है, तो उसके अर्थ निकाले जाने लगते हैं। मंगल व बुध के बीच दूरी कम हो रही है तो मंगल-अमंगल की बातें की जाने लगती हैं, यदि चंद्र ग्रहण या सूर्य ग्रहण हो रहा है तो विभिन्न राशियों पर उसके सकारात्मक-नकारात्मक असर और कथित अनिष्टकारी प्रभावों को कम करने के नुस्खे बताए जाने लगते हैं। ऐसी प्रत्येक घटना पर हर चैनल किसी-न-किसी ज्योतिषाचार्य को ले आता है।

क्या बात-बात में हर चीज का सम्बंध ग्रह-नक्षत्रों से जोड़ा जाना चाहिए? क्यों हर अच्छी या बुरी घटना के लिए ग्रह-नक्षत्रों को ज़िम्मेदार ठहराया जाना चाहिए? क्या बिहार में कोसी की बाढ़ इसलिए आई क्योंकि नेपाल में तटबंध फूटने से कुछ दिन पहले ही चंद्र ग्रहण की घटना हुई थी? कुछ साल पहले सूर्य ग्रहण की एक घटना के समय देश के प्रमुख वैज्ञानिकों में से एक प्रो. यशपाल से जब सूर्य ग्रहण के असर के बारे में सवाल पूछा गया तो उनका जवाब था, "बेचारे हमारे ग्रह और उपग्रह अंतरिक्ष

में चक्कर लगा रहे हैं। अब यदि धरती की छाया चंद्रमा पर गिर जाए तो इसमें पृथ्वी का क्या दोष?"

अफसोस इस बात का है कि आज मीडिया में नक्षत्रीय घटनाक्रम पर वैज्ञानिक नज़रिए से चर्चा नहीं होती क्योंकि यह माना जाता है कि ऐसी चर्चाओं को लोग पढ़ना या देखना पसंद नहीं करते। इसलिए मीडिया में विज्ञान को उतना स्थान नहीं दिया जाता, जितना फलित ज्योतिष को। हद तो तब हो जाती है जब मीडिया उसी प्रकार की बातें करने लगता है जिस प्रकार की बातें ग्रहण को लेकर हमारे बुज़ुर्ग अक्सर करते आए हैं। जैसे गर्भवती स्त्रियों के लिए ग्रहण खतरनाक होता है, ग्रहण के दौरान कुछ भी खाना नहीं चाहिए, खाद्य सामग्री में तुलसी की पत्तियां रखकर उसे अपवित्र होने से बचाया जाना चाहिए, ग्रहण के तत्काल बाद स्नान करना चाहिए आदि आदि।

यहां एक सवाल यह उठता है कि क्या मीडिया का काम वही पेश करना है जिसे लोग पढ़ना या देखना चाहते हैं या वह जो यथार्थ है? भाग्यवादी होना सबसे आसान है और इसीलिए जब भाग्य की बातें की जाती हैं, तो उसमें रस आना स्वाभाविक है। मीडिया के लिए भी ऐसी बातें प्रकाशित या प्रसारित करना आसान होता है जिनकी पुष्टि नहीं की जानी है। ज्योतिष ऐसा ही विषय है जिससे सम्बंधित जानकारी पेश करने से पहले उसकी किसी भी प्रकार से जांच-पड़ताल करने की ज़रूरत नहीं होती है और न ही बाद में इस बात का संज्ञान लिया जाना ज़रूरी समझा जाता है कि जो भविष्यवाणियां की गई थीं, वे कितनी सच निकलीं। तो क्या मीडिया का दायित्व ज्योतिष सम्बंधी अधकचरी सामग्री पेश करने के बजाय यह नहीं होना चाहिए कि वह ग्रह-नक्षत्रों को लेकर वैज्ञानिक नज़रिया पेश करे? लोगों में भाग्यवाद के वायरस छोड़ने के बजाय कर्मवादी बनने की प्रेरणा दे?

यह धारणा ही गलत है कि पाठक या दर्शक विज्ञान सम्बंधी बातों को पढ़ने या देखने में रुचि नहीं लेते हैं। जेनेवा में हुए बिग बैंग थ्योरी के प्रयोग से सम्बंधित खबरें सबसे ज़्यादा देखी व पढ़ी गईं। दरअसल, पाठक व दर्शक की रुचि भी उन खबरों या सामग्री में बनती जाती है जो अक्सर पेश की जाती है। अगर कोई खबर दिखाई ही नहीं जाएगी, तो भला उसमें पाठकों या दर्शकों की दिलचस्पी जागृत होगी भी कैसे? इसलिए सवाल रुचि-अरुचि का नहीं है। रुचि विकसित भी की जा सकती है। शेयर बाज़ार इसका सबसे बड़ा उदाहरण है।

तो मीडिया को क्या करना चाहिए? ज्योतिष महज भविष्य की भाग्य आधारित एक कल्पना है, जबकि विज्ञान कर्मवाद पर आधारित वास्तविकता है। मनुष्य के कदम-कदम पर विज्ञान मौजूद है, लेकिन विडंबना यह है कि इसे पेश नहीं किया जा रहा है। यहां विज्ञान को पेश करने से मतलब महज विज्ञान सम्बंधी खबरों को पेश करना भर नहीं है।

वास्तव में ज़रूरत वैज्ञानिक नज़रिए की है जिसका सख्त अभाव नज़र आता है। यह मान लिया जाता है कि वैज्ञानिक नज़रिए से केवल विज्ञान सम्बंधी कार्य करने वाले लोगों (जैसे वैज्ञानिक, विज्ञान विषय पढ़ाने वाले प्रोफेसर व शिक्षक और विज्ञान के शोधार्थी) का ही सरोकार है, आम जनता से इसका कोई लेना-देना नहीं है। चूंकि मीडिया खुद को आम जनता के निकट होने का एहसास दिलाने का प्रयास करना चाहता है, इसलिए विज्ञान की वह जानबूझकर उपेक्षा कर देता है।

सच तो यह है कि यदि आम जनता में भी वैज्ञानिक नज़रिए का विकास हो जाए तो देश के सामने मौजूद कई सामाजिक समस्याओं का समाधान अपने आप हो जाएगा। वैज्ञानिक नज़रिए का मतलब धर्म से विमुख होना या भाग्य को पूरी तरह से नकारना भी नहीं है। कई वैज्ञानिक धार्मिक क्रियाकलापों के साथ भी वैसे ही जुड़े रहते हैं, जैसे विज्ञान के साथ। इससे उनकी ज़िंदगी में कोई विरोधाभास पैदा नहीं होता है। ज़रूरत इसी वैज्ञानिक नज़रिए को उभारने की है। मीडिया, खासकर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का प्रभाव जग ज़ाहिर है। मीडिया को अपने इसी प्रभाव व ताकत का इस्तेमाल लोगों में वैज्ञानिक नज़रिया विकसित करने व कर्मवादी बनने के लिए प्रेरित करने में करना चाहिए, न कि भविष्य वक्ताओं को पेश करके कूपमंडूक बनाने में। ***(स्रोत फीचर्स)***